एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गाजर की वैज्ञानिक विधि से खेती

(*सुमित कुमार[1], सुनील कुमार गोला[1] एवं ज्योति रानी[2])
[1]सब्जी विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[2]मौसम विभाग, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sumitbidlan2@gmail.com

गाजर को जड़ वर्गीय सब्जियों में जाना जाता है। इसमें विटामिन ए, सी, और के (K) साथ साथ बी-कॉम्प्लेक्स और पोटैशियम, मैग्नीशियम, फाइबर आदि विटामिन और खनिजों का भरपूर स्रोत है। इसके विशेषता से युक्त पौष्टिक गुणों के कारण, यह लोगों के आहार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मुख्य रूप से गाजर का हलवा, गाजर की सब्जी, और सलाद आदि के रूप में खाया जाता है। इसमें मौजूद बीटाकैरोटिन के कारण, गाजर को आँखों के स्वास्थ्य के लिए भी बहुत लाभकारी माना जाता है।

भूमि: गाजर की फसल को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। लेकिन हल्की लोमी मिट्टी इसके उत्पादन के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। अधिक लवणीय मिट्टी भी गाजर की गुणवत्ता को कम कर देती है। मिट्टी जिसका पीएच 6.5 और उच्च कार्बोनिक पदार्थ ही अधिक पैदावार दे पाते है।

जलवायु : गाजर के सर्वोत्तम उत्पादन के लिए लंबे ठंडे मौसम की आवश्यकता होती है। अंकुरण के लिए इष्टतम तापमान 7-24°C और वृद्धि के लिए 18-24°C है। सबसे अच्छा जड़ का रंग 15-20 डिग्री सेल्सियस पर विकसित होता है।

उन्नत किस्में: पूसा मेघाली, हिसार गैरिक, पीसी 161, नैनटेस।

बुवाई का समय : मैदानी इलाकों में गाजर की बुआई मध्य अगस्त से दिसम्बर के प्रारम्भ तक की जाती है। पहाड़ों में गाजर मार्च से जुलाई तक बोई जाती है।

खेत की तैयारी : बुवाई करने से पहले खेती की तैयारी के लिए पहली जुताई पलटने वाले हल से करनी चाहिए। उसके पश्चात 2 या 3 बार हल या फिर काल्टिवेटर से मिट्टी को भुरभुरी बना लेना महत्वपूर्ण होता है। फिर पाटा के प्रयोग से खेत को समतल बना ले और खेत को खरपतवार रहित कर दे।

बीज की मात्रा : अंकुरण और उपज में सुधार के लिए बुआई से पहले बीजों को एजेटोबेक्टर और पीएसबी से उपचारित किया जाना चाहिए। गाजर के लिए बीज दर 10-12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है।

रोपण दूरी : गाजर को मेड़ों पर 45 सेमी और पौधे से पौधे के बीच की दूरी 8 सेमी रखकर बोया जाना चाहिए। पौधों के बीच अंतर बनाए रखने के लिए बुआई के 3-4 सप्ताह बाद जरूरत से अधिक पौधों को निकल देना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक : गाजर पोषक तत्वों, विशेष रूप से पोटाश, का प्रचुर पोषक है। जड़ों के उचित रंग विकास के लिए पोटाश का प्रयोग महत्वपूर्ण है। सीसीएस एचएयू, हिसार प्रति हेक्टेयर 60:24:24 किलोग्राम एनपीके (NPK) की सिफारिश करता है। लगभग 50 टन गोबर की गली सड़ी खाद जुताई करते समय डाला जाता है।

सिंचाई: अच्छी गुणवत्ता वाली जड़ों की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए उचित जल आपूर्ति महत्वपूर्ण है। एक समान अंकुरण के लिए, बुआई मिट्टी की अच्छी नमी वाली स्थिति में की जानी चाहिए। हल्की मिट्टी में पहली सिंचाई बुआई के तुरंत बाद और बाद में 4-6 दिनों के अंतराल पर करें।

खरपतवार नियंत्रण : गाजर आमतौर पर शुरुआत में धीरे-धीरे बढ़ती है। प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों को हटाना आवश्यक है। खरपतवारो को रोकने के लिए 2-3 बार निराई गोडाई करे। खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से स्टॉम्प प्रभावी है।

खुदाई: अधिकांश किस्मों की बुआई से कटाई तक 90-100 दिन लगते हैं। कटाई में देरी से जड़ें लकड़ीदार और खराब गुणवत्ता वाली हो जाती हैं।

उपज : औसत जड़ उपज 300- 400 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।